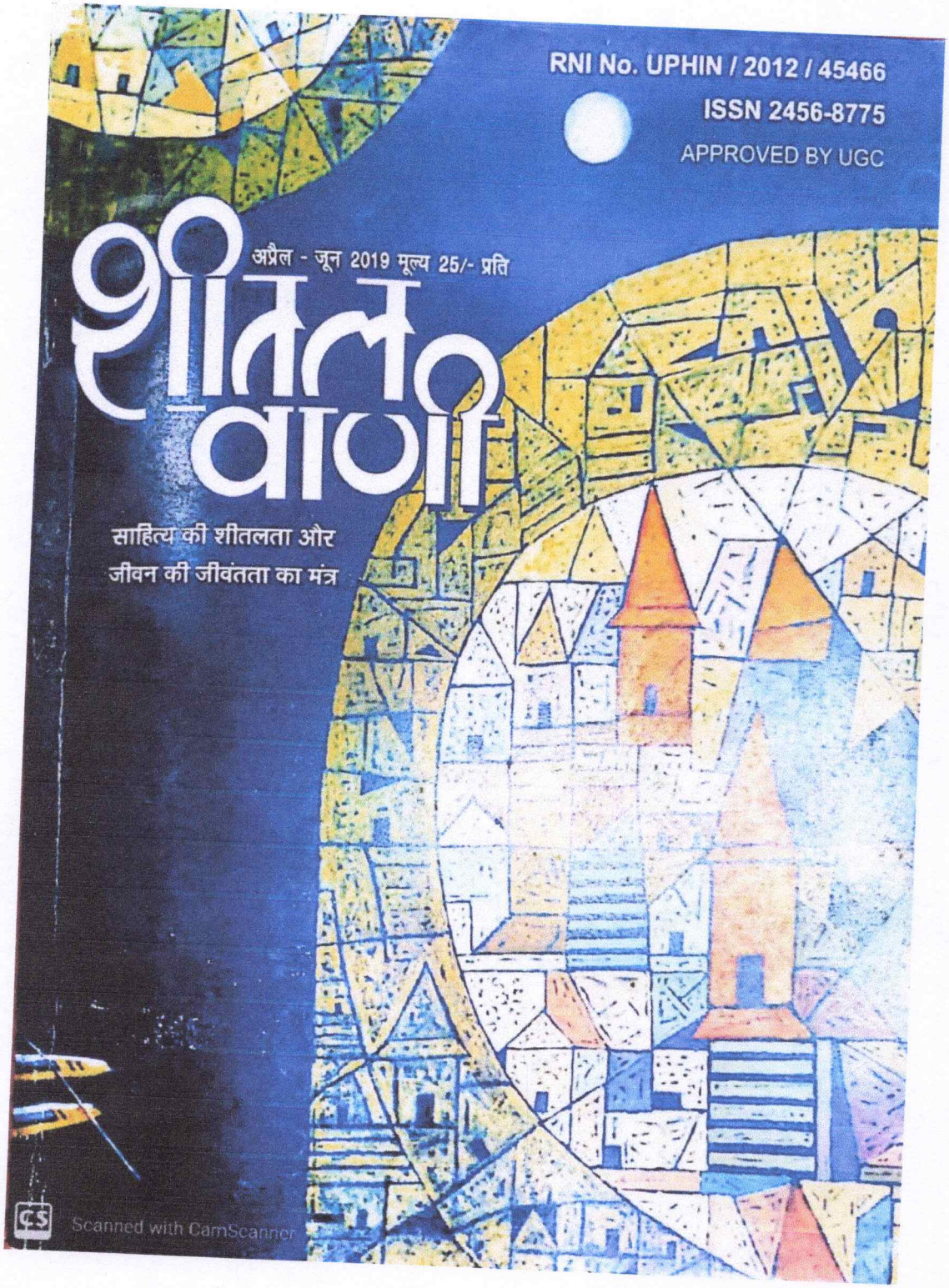
RNI No. UPHIN / 2012 / 45466
ISSN 2456-8775
APPROVED BY UGC
अप्रैल - जून 2019 मूल्य 25/- प्रति
शीतल वाणी
साहित्य की शीतलता और
जीवन की जीवंतता का मंत्र
Scanned with CamScanner

शीतल वाणी
हिन्दी त्रैमासिक

अनुक्रम

अपनी बात
आओ हम भी पानी का हिसाब रखें! / 1

संस्मरण
ये थी ख़बरें आज तक .... *डॉ. वीरेन्द्र आजम / 3*

साक्षात्कार
विचारधारा के बिना आदमी और केंचुए ...जयनंदन / 5

कहानी
फालतू कोना *डॉ. हंसा दीप / 11*
वसीयत *देवी नागरानी / 14*
भात *नसीम साकेती / 19*
लघुकथा – रिक्शेवाला *सुरेश सौरभ / 43*

साहित्यिक विमर्श
निरंजन श्रोत्रियः युवा कविता .... *रोहित कौशिक / 23*
पत्रिकाएँ मिली / 35

कुछ चुनिंदा शेर

कौन आएगा यहाँ कोई न आया होगा
मेरा दरवाज़ा हवाओं ने हिलाया होगा - कैफ भोपाली

चाहे सोने के फ्रेम में मढ़ दो
आईना झूठ बोलता ही नहीं। -कृष्ण बिहारी नूर

रात का इंतज़ार कौन करे
आजकल दिन में क्या नहीं होता। - डॉ. बशीर बद्र

हर फ़ैसला होता नहीं सिक्का उछाल के
ये दिल का मुआमला है ज़रा देख भाल के।-उदय प्रताप

बेवजह दिल पे कोई बोझ न भारी रखिये
ज़िंदगी जंग है इस जंग को जारी रखिये। -डॉ. उर्मिलेश

चलने को एक पाँव से भी चल रहे हैं लोग
पर दूसरा भी साथ दे तो और बात है। -डॉ. कुंवर बेचैन

आया खिलौने वाला मजबूर बाप रोया
उंगली छुड़ा रहे थे बच्चे मचल मचल के। -अनु सपन

गीत / ग़ज़ल / कविताएँ
अशोक अंजुम की चार ग़ज़लें / 25
नवीन माथुर पंचोली की तीन ग़ज़लें / 77
डॉ. शिव कुशवाहा की तीन कविताएँ / 26
अनुभूति गुप्ता की तीन कविताएँ / 53
डॉ. बी. के. मिश्र के तीन गीत / 27
हाइकु – धर्मपाल महेंद्र जैन / 50
दोहे – राजेश जैन राही / 91
शिवानंद सिंह सहयोगी की तीन कुंडलियाँ / 88

पुस्तक समीक्षा
कालजयी और कालजीवी हैं अनु के गीत *अवनीन्द्र कमल / 28*
नैतिकता के समर्थन में खड़ी कहानियाँ *कृष्ण सुकुमार / 29*

शोध आलेख
अब हम कातबि चरखवा *डॉ. महीपाल सिंह राठौड़ / 30*
मिथक काव्य के परिप्रेक्ष्य.... *डॉ. ममता शर्मा गोडबोले / 32*
तुलसी का रामराज्य *आदित्य चतुर्वेदी / 36*
दलित साहित्य विमर्श और राजपाल .... *डॉ. रवि रंजन / 40*
प्रभा खेतान कृत 'छिन्नमस्ता' .... *चौहान हेतलबहेन / 44*
भारतीय शास्त्रीय संगीत की शैलियाँ *डॉ. शीरीन सलीम / 47*
तुलसी युगीन सामाजिक यथार्थ *हरिओम कुमार द्विवेदी / 51*
सोशल मीडिया में हाशिए के स्वर *अविनाश कुमार / 54*
नरेश मेहता : आधुनिक हिंदी कविता ..... *मयंक /57*
दरबारी काव्य का प्रतिपक्ष और नज़ीर.... *निवेदिता प्रसाद / 64*
कुबेरनाथ राय की लोकचेतना *डॉ. शीरीन सलीम / 69*
हिन्दी बाल साहित्य में जीवनी, ... *डॉ कुमारी उर्वशी / 71*
हिन्दी उपन्यासों में संस्कृति.... *डॉ. कल्याण कुमार झा / 75*
जनजातीय साहित्य और रमणिका... *डॉ. नूतन कुमारी / 78*
दलित साहित्य की अवधारणा एवं परंपरा *अविनाश रंजन / 83*
कन्हार का जीवन–संघर्ष और जीवन ... *रितु होता / 86*
प्रेमचंद के कहानियों में कथ्यगत.... *डॉ. साक्षी शालिनी / 89*
प्रभा खेतान के उपन्यासः एक विवेचन *अनामिका / 92*
उत्साहःलोक–चित्त–आनंद..... *डॉ. राकेश कुमार सिंह / 97*
प्रियप्रवास में प्रकृति चित्रण *डॉ. मंजुला दास /100*

Scanned with CamScanner

JOURNAL No.: 41060 ISSN 2456-8775

शोध आलेख

हिन्दी उपन्यासों में संस्कृति–बोध

• डॉ. कल्याण कुमार झा

हिन्दी उपन्यास में संस्कृति की महत्वपूर्ण भूमिका है। संस्कृति हमारी सामाजिक विरासत है। समाजिक जीवन के विभिन्न पहलुओं से वहाँ के सांस्कृतिक धारा को समझा जा सकता है। ग्रामीण संस्कृति में त्योहार, मेले, कलाएँ, प्रथाएँ, जनरीतियाँ, रूढ़ियाँ तथा विभिन्न संस्कार, परंपराएँ आदि इसके प्रमुख अंग हैं। व्यक्ति, समाज और धर्म एवं संस्कृति एक-दूसरे के इतने निकट हैं कि उन्हें अलग करना बड़ा ही मुश्किल कार्य है। व्यक्ति के व्यवहार में, उसके रहन-सहन में उसकी सांस्कृतिक पृष्ठभूमि का परिचय मिलता है। व्यक्ति के व्यवहार में संस्कृति प्रतिबिम्बित होती है। संस्कृति मानव के भूत, वर्तमान तथा भावी जीवन की सर्वांगपूर्ण अवस्था है। यह जीवित रहने का ढंग है। जन्म से लेकर मृत्यु तक तथा इससे भी आगे तक संस्कृति समस्त मानव चेतना को व्याप्त किये हुए है। व्यक्ति के आचरण, चिंतन, क्रियाशीलता, ज्ञान अध्यात्म एवं कल्पना में संस्कृति का ही रूप स्थित है। अत: संस्कृति के वशीभूत होकर ही मानव उन क्रियाओं को करता है, जिनके द्वारा उसका भविष्य निर्धारित होता है। संस्कृति वह चीज़ मानी जाती है, जो हमारे समस्त जीवन में व्याप्त है तथा जिसकी रचना और विकास में अनेक पीढ़ियों के अनुभवों का योग है।

प्रेमचंद विरचित उपन्यास 'कर्मभूमि' (1933) में कुरीतियों के प्रति प्रतिकार को दिखाया गया है। इस उपन्यास का मुख्य नायक अमरकांत है, जो बड़ा ही साहसी और ईमानदार व्यक्ति है। उसके पिता उसके ठीक उल्टा स्वभाव के हैं। जिनके पास एक दुकान है, जिससे उन्हें आमदनी बहुत होती है। इस कारण समरकांत लोगों के बीच सूद पर पैसे देते थे, उसी तरह वसूल भी कर लेते थे। लेकिन उनका पुत्र अमरकांत उनके इस कारनामें से असंतुष्ट रहता है। जिस कारण पिता और पुत्र में स्नेह का बंधन नहीं है। समरकांत पूजा-पाठ बहुत करते थे, उनका लड़का इसे ढोंग समझता था। उसके पिता लोभी थे, पर अमरकान्त पैसे को ठीकरा समझता था। मगर कभी-कभी बुराई से भलाई पैदा हो जाती है। पुत्र सामान्य रीति से पिता का अनुगामी होता है। महाजन का बेटा महाजन, किसान का बेटा किसान होता है, मगर यहाँ इस द्वेष ने महाजन के पुत्र को महाजन का शत्रु बना दिया। इसका यह परिणाम हुआ कि अमरकांत अपने घर-परिवार को त्याग कर समाज में जो छुआछूत, ऊँच-नीच, जाति-पाति व्याप्त थी उसे समाप्त कर सबको समान बनाने का प्रयत्न करने लगा जो इन पंक्तियों से अभिव्यक्त किया जा सकता है-

"अमरकांत इसी भाँति महीनों से देहातों का चक्कर लगाता चला आ रहा है। लगभग पचास छोटे-बड़े, गाँवों को वह देख चुका है, कितने ही आदमियों से उसकी जान-पहचान हो गयी है, कितने ही उसके सहायक हो गये हैं, कितने ही भक्त बन गये हैं। नगर का वह सुकुमार युवक दुबला हो गया है, पर धूप और लू, आँधी और वर्षा, भूख और प्यास सहने की शक्ति उसमें प्रखर हो गयी है। भावी जीवन की यही उसकी तैयारी है, यही समस्या है। वह ग्रामवासियों की सरलता और सहृदयता, प्रेम और सन्तोष से मुग्ध हो गया है। ऐसे सीधे-सादे, निष्कपट मनुष्यों पर आये दिन जो अत्याचार होते रहते हैं, उन्हें देखकर उसका खून खौल उठता है। जिस शांति की आशा उसे देहाती जीवन की ओर खींच लायी थी, उसका यहाँ नाम भी न था। घोर अन्याय का राज्य था और अमर की आत्मा इस राज्य के विरुद्ध झण्डा उठाये फिरती थी।"[1]

जैनेन्द्र के 'त्याग-पत्र' उपन्यास में व्यक्ति के मन की व्यथा को उद्घाटित किया गया है। इस उपन्यास का सार यह है कि हमारे समाज में एक स्त्री के प्रति लोगों का दृष्टिकोण कैसा रहता है। इस उपन्यास की मुख्य नायिका मृणाल है, जिसे बचपन से ही एक लड़की होने के कारण उसके अपने ही घर में भाभी द्वारा प्रताड़ित किया जाता है। नहीं उसे पढ़ने दिया जाता है और नहीं उसे किसी भी काम के लिए स्वतंत्र छोड़ा जाता है।

डॉ. कल्याण कुमार झा
एसोसिएट प्रोफेसर,
विश्वविद्यालय हिन्दी विभाग,
बी.आर.ए.बी.यू., मुजफ्फरपुर।

Scanned with CamScanner

यही विडम्बना है इस उपन्यास की नायिका मृणाल की। मृणाल की सहेली शिला है। शिला के साथ मृणाल उसके घर आने-जाने के क्रम में उसके भाई के प्रति आकृष्ट हो जाती है, जिसका पता मृणाल की भाभी को चल जाता है, तब वह उसके भाईयों से बात करके उसकी शादी एक उम्रदराज व्यक्ति से करवा देती है। मृणाल अपने ससुराल चली जाती है, लेकिन वह इस विवाह से खुश नहीं रहती है। मृणाल चौथे दिन ही मायके आती है अब उसकी इच्छा है कि वह यही रह जाए लेकिन उसे अपने पति के साथ नहीं चाहते हुए भी जाना पड़ता है और कहा भी जाता है कि शादी के बाद एक लड़की का घर उसका ससुराल ही होता है। इन बातों से इन पंक्तियों को उद्धृत किया जा सकता है-

"लेकिन जिस आसानी से मैंने 'बस' कह दिया वैसी सरल बात नहीं थी, यह मैं आज खूब अच्छी तरह जानता हूँ। विवाह की ग्रन्थि दो के बीच की ग्रन्थि नहीं है, वह समाज के बीच की भी है। चाहने से ही वह क्या टूटती है। विवाह भावुकता का प्रश्न नहीं, व्यवस्था का प्रश्न है। वह प्रश्न क्या टाले टल सकता है? वह गाँठ है, जो बँधी कि खुल नहीं सकती। टूटे तो टूट भले ही जाए, लेकिन टूटना कब किस का श्रेयस्कर है?" [2]

तसलीमा नसरीन द्वारा रचित उपन्यास 'लज्जा' में बंग्लादेश के संस्कृति को लेखिका ने उभारने का प्रयास किया है। इस उपन्यास में बंग्लादेश की परिस्थिति ऐसी बन गई है जहाँ दंगा-फसाद आये दिन होते ही रहते हैं, साथ ही मुस्लिम लोगों को भी बकायदा नहीं छोड़ा जाता है। वहाँ प्रतिदिन लूट-मार हिन्दुओं के साथ होते ही रहता है, साथ ही हिन्दू समुदाय के लोगों को जबरन धर्म परिवर्तन कराया जाता है। हिन्दुओं का मकान ढहवा दिया जाता है, ऐसी ही परिस्थिति से हिन्दू वर्ग के लड़की की भी बंग्लादेश में कोई इज़्ज़त नहीं है। उसके साथ दिन-रात छेड़खानी, बलात्कार किया जाता है। इस उपन्यास का मुख्य नायक सुरंजन है, जो इन सब बातों का प्रतिकार करती है, जिसके कारण वहाँ के बदमाशों ने उन्हीं की बहन को उठा कर ले जाता है। यही विडम्बना है यहाँ के हिन्दुओं की, जो इन पंक्तियों से स्पष्ट किया जा सकता है-

"सब झनझनाकर टूटने लगा। क्षणभर में सब कुछ तहस-नहस हो गया। कोई कुछ समझ पाये, इससे पहले माया भी जड़, स्तब्ध खड़ी थी। अचानक वह चिल्ला पड़ी, जब उनमें एक ने उसका हाथ पकड़कर खींचा। किरणमयी भी अपने धैर्य का बाँध तोड़ती हुई अन्तर्नाद कर उठी। सुधामय सिर्फ कराह रहे थे। उनके मुँह से कोई शब्द नहीं निकल पाया। अपनी आँखों के सामने उन्होंने देखा कि माया को वे लोग खींच रहे हैं। माया पलंग की पाटी पकड़कर उनसे छूटने की कोशिश कर रही है। किरणमयी दौड़कर अपने दोनों हाथों से माया को पकड़ती है। उन दोनों की शक्ति, दोनों के अन्तर्नाद को चीरकर वे माया को खींचकर ले गये। किरणमयी उनके पीछे-पीछे दौड़ी। चिल्लाकर कहती रही, 'बेटा, उसे छोड़ दो! मेरी माया को छोड़ दो।" [3]

श्रीलाल शुक्ला का प्रसिद्ध उपन्यास 'रागदरबारी' व्यंग्य प्रधान है। इस उपन्यास में उपन्यासकार ने शिवपाल गंज गाँव को केन्द्र बनाकर इसकी रचना की है। जहाँ कोई भी काम सही ढंग से नहीं हो पाता है। वहाँ हर तरफ धोखाधरी है, वहाँ का हर काम अव्यवस्थित है, जो काम जिसके अधीन चला गया वह व्यक्ति उसका मालिक ही बन बैठता है और सारे काम पर अपना वर्चस्व जमा बैठता है। उसी तरह छंगामल विद्यालय इंटर कॉलेज के लड़के खेल-कूद को दुनिया से काफ़ी परिचित थे, उस विद्यालय में पढ़ाई-लिखाई को कोई चर्चा ही नहीं है। विद्यालय की ऐसी परिस्थिति को देखकर न बच्चे परेशान होते हैं न अभिभावक और न ही शिक्षक। बल्कि सारे पक्ष संतुष्ट हैं। इसी तरह इस गाँव में कभी लूट-मार तो कभी छिना-झपटी आदि होते ही रहते हैं। इस उपन्यास में किसी भी बात को लोग ज़्यादातर व्यंग्य में ही कहते थे, जो इन पंक्तियों में चित्रित किया गया है -

"महापुरुष अपने सिंहासन पर बैठे अपने 'पालक-बालकों' का खेल देखते रहते हैं। इस देश में महापुरुषों और 'पालक-बालकों' के अलावा कुछ सिरफिरे भी बसते हैं। वे कभी-कभी महापुरुष के सामने आकर चीखने लगते हैं। कहते हैं, "महापुरुष, तुम्हारा 'पालक-बालक' बड़ा भ्रष्टाचार कर रहा है। तुम्हारी इज़्ज़त को रगड़-रगड़कर पानी बनाए दे रहा है।" ऐसे मौके पर ज़्यादातर महापुरुष इतना कहते हैं, "भ्रष्टाचार! मानवीय महाशय, आओ, हम पहले इस बात की जाँच करें कि भ्रष्टाचार होता क्या है?" रंगनाथ सोचता रहा।" [4]

शरतचन्द्र चट्टोपाध्यायजी का उपन्यास 'देवदास' का कथानक प्रेम से ओत-प्रोत है। इस उपन्यास में अलौकिक प्रेम है, जो बचपन की दोस्ती युवा अवस्था में जाकर प्रेम में तब्दील हो जाता है यही इस उपन्यास का सार है। इस उपन्यास का मुख्य नायक देवदास है और मुख्य नायिका पार्वती जो एक-दूसरे को बचपन से जानते हैं, उन दोनों की दोस्ती पाठशाला में होती है, फिर ये दोस्ती आगे चलकर प्रेम का रूप ले लेता है। लेकिन यह प्रेम असफल हो जाता है, वहीं पार्वती की शादी दूसरे व्यक्ति से हो जाती है, पार्वती अपने ससुराल चली जाती है। लेकिन न ही देवदास ही भूल पाता है पार्वती को

Scanned with CamScanner

और नहीं पार्वती ही देवदास को। जैसे निद्रावस्था में शरीर के अंदर अचानक पक्षाघात हो जाए, तो नींद टूटने पर, खोजने पर भी उस पर जैसे अपना कोई अधिकार नहीं मिलता और भयभीत मन क्षणभर के लिए जैसे कोई सहारा नहीं ढूँढ़ पाता, क्योंकि उसका जन्म-जन्मांतर का साथी, हमेशा साथ रहने वाला अंग, चाहने पर भी जैसे साथ नहीं देता। फिर धीरे-धीरे समझ में आ जाता है, धीरे-धीरे अज्ञान मिट जाता है कि यह अंग अब उसका नहीं रहा- ठीक इसी तरह देवदास भी सारी रात यही सोचता रहा कि समय के फेर से अचानक संबंधों पर पक्षाघात हुआ और हमेशा के लिए संबंध विच्छेद हो गया। इन पंक्तियों में ये बात द्रष्टव्य है-

"देवदास मन-ही-मन हिसाब करने लगा। दो दिन बच तो पाऊँगा? किंतु पार्वती के पास जाना ही होगा। उसे बहुत दिनों की, बहुत-सी झूठी बातें और अपना बहुत-सा झूठा आचरण याद आने लगा। किंतु आखिरी दिनों में यह वादा उसे पूरा करना ही होगा। जैसे भी हो, उससे आखिरी मुलाकात करनी ही होगी। लेकिन इस ज़िंदगी की मियाद और अधिक दिन जो नहीं रह गई। यही तो बड़े डर की बात है।"[5]

इस प्रकार यह स्पष्ट है कि हिन्दी उपन्यास में संस्कृति-बोध का अहम भूमिका है। संस्कृति मानव के भूत, वर्तमान तथा भावी जीवन की सर्वांगपूर्ण अवस्था है। यह जीवित रहने का ढंग है और जहाँ तक भारतीय संस्कृति की बात है, यह आरम्भ से ही मानवतावादी रही है। अत: हम कह सकते हैं कि संस्कृति के अन्तर में वह विशालता एवं गहराई है, जिसमें संपूर्ण विश्व समाहित हो सकता है।

सन्दर्भ सूची:

1. कर्मभूमि, संपादक-प्रेमचंद, प्रकाशन-न्यू साधना पॉकेट बुक्स, पृष्ठ सं.-100.
2. त्याग-पत्र, संपादक-जैनेन्द्र कुमार, प्रकाशन-भारतीय ज्ञानपीठ, संस्करण-छठा संस्करण, 2012, पृष्ठ सं.-25.
3. लज्जा, संपादक-तसलीमा नसरीन, प्रकाशन-वाणी प्रकाशन, संस्करण-1994, आवृत्ति-2012, पृष्ठ सं. -122-123.
4. रागदरबारी, संपादक-श्रीलाल शुक्ल, प्रकाशन-राजकमल पेपर बैक्स, संस्करण-चौदहवाँ संस्करण, 2009, पृष्ठ सं.-162.
5. देवदान, संपादक-शरतचन्द्र चट्टोपाध्याय, प्रकाशन-वाणी प्रकाशन, संस्करण-2011, पृष्ठ सं.-122. ■

Scanned with CamScanner